विनोबा कथावली

■ वर्ष : प्रथम ■ अंक : 12 ■ जुलाई 2025

परिवर्तन की गूंजती क्रांति

बोर्डा (चंद्रपुर): कभी-कभी बदलाव की शुरुआत शोरगुल से नहीं, एक शिक्षक की चिंता से होती है।

बोर्डा के जिला परिषद स्कूल में प्रधानाध्यापक प्रशांत काटकर को एक बात लगातार खल रही थी — उनके विद्यार्थी प्रतियोगी परीक्षाओं से दूर भाग रहे थे। गांव के बच्चे, जो पहले से ही गरीबी और सीमित संसाधनों के बोझ तले दबे थे, उन तक अवसरों की रोशनी पहुंच ही नहीं पा रही थी।

"इन बच्चों का प्रतियोगी परीक्षाओं में भाग न लेना, उनके सपनों के दरवाज़े बंद कर रहा था," प्रशांत जी ने टीम विनोबा को बताया।

उन्होंने विद्यार्थियों से एक सीधा संवाद शुरू किया — "अगर ये परीक्षाएं सफलतापूर्वक पार कर लोगे, तो मिलने वाली छात्रवृत्ति तुम्हारे आगे की पढ़ाई का खर्च खुद उठाने का रास्ता खोल देगी। और अगर न भी हुए सफल, तो तैयारी से जो आत्मविश्वास मिलेगा, वो भविष्य के लिए संबल बन जाएगा।"

बच्चों ने तो समझा, लेकिन गांव की चुनौती कुछ और भी थी — माता-पिता बच्चों की शिक्षा से ज्यादा ध्यान शराब और शौक की चीज़ों पर दे रहे थे। तब प्रशांत जी ने एक और कदम उठाया — अपने पैसे से किताबें और स्टेशनरी खरीदी, और बच्चों के साथ छात्रवृत्ति की तैयारी शुरू कर दी। स्कूल के समय के बाद, यहां तक कि छुट्टियों में भी वे बच्चों को पढ़ाते रहे। गर्मी हो या सर्दी, त्योहार हो या अवकाश — स्कूल खुला रहता, क्योंकि वहां एक शिक्षक अपने मिशन पर डटा था।

धीरे-धीरे माहौल बदला। बच्चे अब सिर्फ सवाल नहीं हल कर रहे थे, वे अपने भविष्य पर सोचने और बात करने लगे थे। सत्र 2022-23 में पहली बार सात बच्चों ने NMMSE और JNV जैसी परीक्षाओं में भाग लिया — सभी सफल रहे और एक को छात्रवृत्ति भी मिली। अगले वर्ष 12 छात्र परीक्षा में बैठे, छह सफल हुए और एक को छात्रवृत्ति मिली।

पर यह कहानी अंकों की नहीं, असर की है।

बच्चों की सफलता ने गांव में नई लहर जगा दी। बाकी छात्र भी प्रेरित हुए, शिक्षकों की नज़र में आने की चाह जागी, और माता-पिता ने पहली बार शिक्षा को अपनी प्राथमिकताओं में रखा। इतना ही नहीं, पास के गांवों से भी लोग अपने बच्चों को बोर्डा स्कूल में दाखिल कराने लगे।

बोर्डा का यह स्कूल अब एक पहचान बन चुका है — सिर्फ छात्रवृत्तियों के लिए

नहीं, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और समर्पित नेतृत्व के लिए। इस पूरे परिवर्तन के मूल में खड़े हैं प्रशांत कटकर — जिनकी निष्ठा, परिश्रम और बच्चों के प्रति प्रेम ने यह जमीनी क्रांति रची।

टीम विनोबा ऐसे प्रेरक शिक्षक को नमन करती है — क्योंकि वे सिर्फ पढ़ा नहीं रहे, भविष्य गढ़ रहे हैं। ■

'व्यापक स्तर पर बदलाव शिक्षा से ही संभव है'

"हम चाहते हैं कि लोग सरकारी स्कूल के शिक्षकों पर विश्वास करना शुरू करें।"

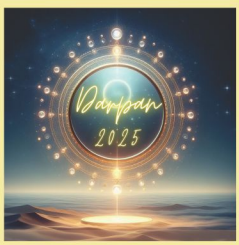

- **संजय डालमिया,** संस्थापक और CEO, OLF

पेज 8

विनोबा विशेष

"बच्चों से बात करना एक सरल विधि है, लेकिन शिक्षक इसका सहसा उपयोग नहीं करते। इसका कारण है धैर्य की कमी। पढ़ी-पढ़ाई विधियाँ हमेशा काम नहीं आतीं। हमें अपनी रचनात्मकता का उपयोग करना होगा।"

पेज 4, 5 6

'जीवनकौशल व्यक्तित्व को स्थिरता देता है'

पुणे: पुणे के DIET प्राचार्य श्री नामदेव शेंडकर ने टीम विनोबा से हुई बातचीत में स्कूलों में जीवनकौशल को सब से ज़्यादा महत्व देने का तर्क समझाया।

आपने जीवनकौशल शिक्षा को हमेशा प्राथमिकता दी है... क्या कारण है?

आज के गतिमान युग में हमारे विद्यार्थियों को—खासकर हमारे सरकारी स्कूलों के बच्चों को—आत्मनिर्भर, मानसिक रूप से मज़बूत और सक्षम बनाना बहुत आवश्यक है। इसीसे उन्हें आत्मविश्वास प्राप्त होगा। जब वे बड़े होंगे तो उनमें संवाद करने, सही फैसले लेने और समस्याओं को हल करने की काबिलियत होगी। इस प्रक्रिया में शिक्षक और विद्यार्थी दोनों में ये कौशल विकसित होते हैं। हम इन सबको काबिल बना सकें, तो सोचिए समाज कितना सशक्त बन जाएगा!

इस काम में सबसे बड़ी चुनौती कौन सी आई और आपने उसे कैसे हल किया?

पुणे जिले में कुल 13,500 स्कूल हैं। इतने बड़े पैमाने पर शिक्षकों का प्रशिक्षण और प्रबंधन एक चुनौती थी। यह काम सुचारु रूप से चलाने के लिए हमने प्रत्येक 2 ब्लॉक की जिम्मेदारी एक अधिकारी को दी। इस तरीके से पिछले वर्ष (2024) नियुक्त हुए 1,200 नए शिक्षकों का प्रशिक्षण भी सुचारु रूप से संचालित हुआ। शिक्षकों को सरकारी नियमों, भविष्यवेदी शिक्षण, स्व-विकास, पर्यावरण और आलोचनात्मक सोच पर प्रशिक्षित किया गया। तालमेल में कठिनाई वाले शिक्षकों के लिए विशेष कार्यशालाएँ व संवाद सत्र आयोजित किए गए।

हमारे जीवनकौशल प्रशिक्षणों का अच्छा असर दिखा। खेड़ ब्लॉक के जलिंदर नगर स्कूल में छात्रों की उपस्थिति श्री दत्तात्रय वारे ने 6 से 130 तक पहुंचाई। वहीं, वेल्हे-राजगड के पासली स्कूल में श्रीमती शिल्पा शिरोडे ने लड़कियों की कम उपस्थिति के कारण दूर कर, उनकी संख्या बढ़ाई।

DIET प्राचार्य
श्री नामदेव शेंडकर

"जीवनकौशल विद्यार्थियों का समग्र विकास करते हैं, उन्हें आत्मनिर्भर और मानसिक रूप से मज़बूत बनाते हैं, समस्याओं को हल करने की क्षमता देते हैं। इससे उनका तनाव (performance pressure) कम रहता है और उन्हें स्थिरता मिलती है।"

कोई ऐसी समस्या जिसका आप विशेष रूप से ज़िक्र करना चाहेंगे?

स्कूली दबाव, परीक्षाओं का संकट और घरेलू समस्याओं से विद्यार्थियों में चिंता, मानसिक अस्थिरता और तनाव का बढ़ता स्तर एक बड़ी समस्या रही है। तनाव कम करने का जो एक सबसे अच्छा तरीका है, वह है व्यक्तित्व विकास...और व्यक्तित्व विकास प्रभावी ढंग से करने का तरीका है जीवनकौशल विकसित करना। साथ ही हमने स्कूलों में 'व्यक्तित्व विकास' और 'तनाव नियंत्रण' जैसे विषयों पर लगातार कार्यशालाएँ आयोजित कीं। इसके बाद विद्यार्थियों में मानसिक शांति और आत्मविश्वास के साथ परीक्षा के परिणाम भी अच्छे आए।

जीवनकौशल शिक्षा के अंतर्गत कौन सी अन्य गतिविधियाँ हैं?

SCERT ने मार्च 2025 में 'शिक्षक क्षमता वृद्धि 2.0' के तहत सभी जिलों के शासकीय और स्थानीय स्वराज्य संस्थाओं के स्कूलों के शिक्षकों का प्रशिक्षण पूरा किया। जून 2025 मे SCERT और DIET ने सिलेक्शन ग्रेड और सीनियर ग्रेड के शिक्षकों के लिए तनाव प्रबंधन पर प्रशिक्षण सत्रों का भी आयोजन किया।

हमारे शिक्षक गतिविधि समूहों (Teacher Activity Group – TAG) के माध्यम से हाल ही में हमने शिक्षकों के लिए एक प्रतियोगिता का आयोजन किया था। इसी तरह, पुणे में वर्षों से आयोजित की जा रही बाल नाट्य प्रतियोगिता पिछले तीन सालों से DIET की ओर से की गई। पिछली नाट्यस्पर्धा में 20 ब्लॉकों से 200 शिक्षकों ने हिस्सा लिया था।

DIET पुणे में जीवनकौशल शिक्षा को किस दिशा में विकसित करने की योजना है?

भविष्य के लिए जीवनकौशल शिक्षा को व्यापक और समावेशी बनाने पर विशेष ध्यान केंद्रित किया जाएगा। हम समग्र शिक्षा के लगभग 250 सक्रिय साधन व्यक्तियों को पुरस्कृत करने की योजना बना रहे हैं। जुलाई महीने से ये साधन व्यक्ति दूरदराज के स्कूलों के शिक्षकों से जुड़ेंगे और जीवनकौशल में उनके कार्य को हमारे द्वारा अवसर दिलाएंगे। इन सभी कामों की योजना बनाने और डेटा इकट्ठा करने में हमें विनोबा टीम से काफी मदद मिली।

आगे डिजिटल कौशल (जैसे विनोबा ऐप का प्रभावी उपयोग) और पर्यावरणीय संवेदनशीलता एवं रचनात्मकता को बढ़ावा देने वाले कार्यक्रम शुरू करने की योजना है। हमारा यह प्रयास रहेगा कि कार्यशालाएँ और ऑनलाइन कोर्स द्वारा शिक्षकों को निरंतर सीखने और स्वयं को बेहतर बनाने के अवसर मिलते रहें। ■

अमरावती: जिला परिषद अमरावती ने जून महीने में ओपन लिंक्स फाऊंडेशन (OLF) द्वारा संचालित 'आचार्य विनोबा भावे शिक्षक सहाय्यक कार्यक्रम' का शुभारंभ किया। इसके अंतर्गत जिले के शिक्षकों को आधुनिक तकनीक की सहायता से अधिक सक्षम बनाकर उनके कार्यों को नई दिशा दी जाएगी। इस अवसर पर अमरावती ZP CEO संजिता महापात्रा, शिक्षा अधिकारी डॉ. अरविंद मोहरे और कई अन्य अधिकारी उपस्थित थे। टीम विनोबा की ओर से OLF के COO विश्वजीत पवार, डिवीजन मैनेजर चित्रा खन्ना, प्रोग्राम मैनेजर रघुनाथ गायकवाड और प्रोजेक्ट ऑफिसर सागर गजभिये उपस्थित थे।

सिवनी: कलेक्टर सुश्री संस्कृति जैन के हाथों सिवनी जिले के विभिन्न स्कूलों के 13 शिक्षकों को POM पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर DPC श्री महेश कुमार बघेल और विनोबा टीम के सदस्य भी उपस्थित रहे।

पुणे: DIET प्राचार्य श्री नामदेव शेंडकर ने जिले के 10 शिक्षकों को POM पुरस्कारों से और 4 शिक्षकों को लाईब्रेरी बैग देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर DIET के सभी वरिष्ठ व्याख्याता और विनोबा टीम के सदस्य उपस्थित थे।

जलगांव: यहाँ के शिक्षा अधिकारी के कार्यालय में आयोजित कार्यक्रम में शिक्षा अधिकारी श्री विकास पाटील और उप शिक्षा अधिकारी श्री विजय सरोदे के हाथों जलगाँव जिले के 4 शिक्षकों को POM पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर विनोबा टीम के सदस्य भी उपस्थित थे।

रायगढ़: जिला शिक्षा अधिकारी डॉ के. वेंकट राव ने एक जिला स्तरीय समारोह में 4 शिक्षकों को विनोबा POM पुरस्कारों से सम्मानित किया। इस अवसर पर DMC श्री नरेंद्र कुमार चौधरी, अन्य अधिकारी और विनोबा टीम के सदस्य उपस्थित थे।

धमतरी: कलेक्टर श्री अविनाश मिश्रा और APC श्री एन.के. साहू ने एक जिला स्तरीय समारोह में 4 शिक्षकों को विनोबा POM पुरस्कार से, 4 स्कूलों को 'मिशन अव्वल' गतिविधियों के लिए और 3 केंद्र प्रमुखों CACs को सम्मानित किया।

बस्तर: कलेक्टर श्री हरीश एस. ने जिला स्तरिय समारोह में 5 शिक्षकों को विनोबा POM पुरस्कारों से सम्मानित किया। इस अवसर पर DEO श्री बी. आर. बघेल, DMC श्री अखिलेश मिश्रा और विनोबा टीम के सदस्य भी उपस्थित थे।

कुनघाड़ा—नवोदय का नया रास्ता

कुनघाड़ा (गडचिरोली): विकासखंड चामोर्शी के कुनघाड़ा केंद्र के बच्चों की आँखों में सपने तो थे, पर उन्हें पंख देने वाली प्रतियोगी परीक्षाओं से वे मीलों दूर थे। जो इक्का-दुक्का कोशिश करते भी, कामयाबी उनके हाथ नहीं आती।

फिर वर्षों बाद, अचानक एक सुखद घटना घटी। इस केंद्र के अंतर्गत स्कूलों से 2 छात्र नवोदय की परीक्षा में सफल हुए और 9 को छात्रवृत्ति मिली। साल था 2019-20।

अचानक यह बदलव आया कैसे?

कई बार मंज़िल बस एक कदम दूर होती है और उस एक आखिरी कदम के लिए चाहिए होता है एक अटूट विश्वास। कुनघाड़ा केंद्र के नए केंद्रप्रमुख गुरुदास गोमासे वह विश्वास लेकर आए थे।

वे कहते हैं, "केंद्र के सारे शिक्षक काबिल थे, मेहनती भी थे। वे बच्चों को इन परीक्षाओं के बहुत करीब ला चुके थे पर कुछ असफलताओं के बाद थोड़े निराश हो गए थे। केंद्रप्रमुख के नाते मेरा कर्तव्य था कि उनका यह विश्वास टूटने न दूं।"

2019-20 की सफलता के बाद आनेवाले वर्षों में यह संख्या सिर्फ आँकड़े नहीं रही, बल्कि एक नई उम्मीदों का पहाड़ गढ़ने लगी। 2023-24 तक कुनघाड़ा केंद्र के कुल 58 छात्र नवोदय की परीक्षा में सफल हुए और 58 को छात्रवृत्ति मिली।

यह केंद्र पूरे जिले में एक मिसाल बन गया।

बच्चों की इस सफलता ने कुनघाड़ा के गांवों में नई लहर जगाई। अभिभावकों की आँखों में पहली बार भविष्य की चमक दिखी; उनका शिक्षकों पर विश्वास बढ़ने लगा।

यही अभिभावक 2019 से पहले तक शिक्षकों की बातों को गंभीरता से नहीं लेते थे। इस ग्रामीण अचंल में कई अभिभावक चाहकर भी परीक्षा की फीस या किताबों का खर्च भी नहीं उठा पाते थे।

ऐसे में गुरुदास जी ने पहल की। केंद्र के सभी 21 स्कूलों के शिक्षकों को प्रेरित किया कि अपनी अपनी स्कूल में आर्थिक योगदान से बच्चों की शिष्यवृत्ति परीक्षा शुल्क और किताबों का खर्च उठाया जाए। उन्होंने स्वयं भी हर स्कूल के लिए आर्थिक योगदान दिया। वे कहते हैं, "शिक्षकों ने पूरा साथ दिया क्योंकि वे सब चाहते थे कि बच्चे इन प्रतियोगी परीक्षाओं में सफल होकर आत्मविश्वास पाएं।"

गुरुदास जी ने बच्चों और शिक्षकों को स्कूल के बाद, रविवार को और गर्मी की छुट्टियों में भी पढ़ाई जारी रखने के लिए प्रेरित किया। वे गर्व से बताते हैं, "सोचिए, छुट्टियों में जब बाकी लोग आराम करते थे, वहाँ हमारे शिक्षक अपनी व्यक्तिगत योजनाएँ एक ओर रखकर बच्चों के भविष्य के लिए जुटे रहे, और छात्र भी उतनी ही लगन से पढ़ते रहे।"

नियमित प्रैक्टिस टेस्ट की एक व्यवस्था बनाई गई। कक्षा पाँचवीं से आठवीं तक के छात्रों के लिए बोर्ड परीक्षा जैसी OMR आधारित परीक्षाएँ भी शुरू करवाई गई। शिक्षकों ने मिलकर अपने संसाधनों से 150 छात्रों के लिए प्रश्नपत्र बनाए और बिलकुल बोर्ड परीक्षाओं की तरह, रोल नंबर देकर, बिना नकल के, परीक्षाएँ लीं।

और फिर... रंग लाई यह खामोश मेहनत!

अब कई अभिभावक खुद फीस और किताबों का खर्च देते हैं। मौसमी कामों के लिए स्कूल से बच्चों को निकाल कर ले जानेवाले अभिभावक भी अब पढ़ाई को प्राथमिकता देने लगे हैं। यहाँ तक की अब निजी स्कूलों के बच्चे भी जिला परिषद स्कूलों में दाखिला लेने लगे हैं, क्योंकि उन्हें यहाँ बेहतर शिक्षा मिल रही है।

गुरुदास जी के साथ कदम से कदम मिलाकर चलनेवाले कुनघाड़ा के शिक्षकों की निष्ठा और प्रयासों से यह केंद्र सचमुच नवोदय का नया रास्ता बन गया है। ■

कूट प्रश्न 12

1. जब शिक्षक प्रत्येक छात्र की अनूठी आवश्यकताओं के अनुरूप अपनी विधियों को समायोजित करते हैं, तो वे ..... निर्देश (instruction) का अभ्यास कर रहे होते हैं।
2. NEP 2020 रटकर सीखने से..... सीखने (learning) की ओर बदलाव को बढ़ावा देती है, जहाँ छात्र कर के सीखते है।

सोलंके सर का सरल सूत्र

अध्यापन बना मज़ेदार, टीचर-एक्सचेंज ने बदले परिणाम

टेंभुर्णा (बुलढाणा): जिला परिषद स्कूल की पहली कक्षा में केंद्रप्रमुख निरीक्षण के लिए आए। एक बच्ची को, जिसे ऐसे मौकों के लिए शिक्षक ने थोड़ा तैयार किया हुआ था, बुलाकर 4 का पहाड़ा सुनाने को कहा। केंद्रप्रमुख, शिक्षक और विद्यार्थियों को एक साथ देखकर वह बच्ची डर गई और रोने लगी। यह देखकर केंद्रप्रमुख, इस छोटी सी बच्ची के पास नीचे फर्श पर बैठ गए।

"डरो मत बेटा। क्या नाम है तुम्हारा?" बच्ची ने रोते-रोते ही अपना नाम बताया। "कहाँ रहती हो?" बच्ची ने गाँव का नाम, अपनी बस्ती का नाम सही-सही बताया। "कौन-कौन रहता है घर पर तुम्हारे?" "माँ, बाबा, दादी, बड़े भैया..." "भैया कौन सी कक्षा में है?" "तीसरी में..." "अच्छा! तो तुम लोग साथ-साथ स्कूल आते हो?".....

बच्ची रोना भूल चुकी थी। उसने हाँ में गर्दन हिलाई। "कौन सा पहाड़ा सुनाने वाली थी तुम?" "4 का।" "यहाँ बोर्ड पर लिखो तो ज़रा, 4 कैसे लिखते हैं..." बच्ची ने तुरंत लिख दिया। "अरे, तुम्हें सब कुछ तो आता है। फिर तुम क्यों रो रही हो? अब हम सब मिलकर तुम्हारे साथ ये पहाड़ा बोलेंगे, ठीक है? पहले तुम शुरू करो।" बच्ची बोली, "4 एकम चार... ।" उसपर सारे बच्चे और शिक्षक मिलकर बोले, "4 दूनी आठ...।" बारी बारी से पहाड़ा हुआ। सबने तालियाँ बजाईं।

ये थे बुलढाणा जिले में खामगाँव ब्लॉक के अंतर्गत आनेवाले टेंभुर्णा केंद्र के प्रमुख, मजबूतसिंह सोलंके। उन्हें मिलने आए टीम विनोबा को सोलंके सर ने बताया कि भले ही वे प्रशासनिक भार संभाल रहे हैं, पर अध्यापन उनके दिल के करीब रहा है। इसीलिए जब भी मौका मिलता है, वे स्कूलों में चले जाते हैं, बच्चों से बात करते हैं और युवा शिक्षकों को छोटी-छोटी अध्यापन की विधियाँ सिखाते हैं।

वे कहते हैं, "बच्चों से बात करना एक सरल विधि है, लेकिन शिक्षक इसका सहसा उपयोग नहीं करते। इसका कारण है धैर्य की कमी... पढ़ी-पढ़ाई विधियाँ हमेशा काम नहीं आतीं। हमें अपनी रचनात्मकता का उपयोग करना होगा।"

उनकी अनेक उपयोगी विधियों में सबसे लाभकारी विधि यह थी कि उन्होंने शिक्षकों को एक-दूसरे के स्कूलों में जाकर पढ़ाने के लिए प्रेरित किया। वे कहते हैं, "वैसे तो ये सारे ही शिक्षक कड़ी परीक्षाएँ पार कर, पूरा प्रशिक्षण लेकर आते हैं... पर कुछ होते हैं, जिनमें स्वाभाविक रूप से अध्यापन का गुण होता है। ऐसे शिक्षकों के विद्यार्थी भी अच्छा प्रदर्शन करते हैं।"

अच्छे शिक्षक पिछड़े स्कूलों में पढ़ाने जाते, तो वहाँ के शिक्षकों को अच्छे अध्यापन का नमूना मिलता और बच्चों में पढ़ाई की रुचि भी बढ़ती। दूसरी ओर, पिछड़े हुए स्कूलों के शिक्षकों को अच्छी स्कूलों में पढ़ाने का आनंद मिल जाता था। सोलंके सर कहते हैं, "सारे शिक्षक मुझे बच्चों के पिछड़ने का कारण भी बताते थे। इस तरह, एक साथ कई उद्देश्य पूरे हो जाते थे।"

बच्चों को अच्छे अध्यापन का स्वाद मिलने की वजह से शिक्षकों के बीच अच्छा अभ्यासपूर्ण अध्यापन करने की स्वस्थ प्रतिस्पर्धा होने लगी। सारी शालाएँ अच्छा प्रदर्शन करने लगीं। तीन वर्षों के भीतर, उनके संकुल के सभी 9 स्कूल "प्रगत शालाएँ" बन गईं।

13 साल शिक्षक, 20 साल केंद्र प्रमुख, और 5 साल से विस्तार अधिकारी का अतिरिक्त भार -- ऐसी जिम्मेदारीयां सक्षमता से निभाने के बाद सोलंके सर 30 जून, 2025, को सेवानिवृत्त होने जा रहे हैं। टीम विनोबा की ओर से आपको शुभकामनाएँ!

कूट प्रश्न 12 का उत्तर

1. विभेदित (Differentiated)
2. अनुभवात्मक (Experiential)

जब केंद्र के शिक्षक डिजिटली स्मार्ट बन जाएं

खरोरा (रायपुर): मैं उस पल को कभी नहीं भूल पाऊंगा जब मेरे शिक्षकों ने खुद ही ऑनलाइन कक्षाओं की सारी व्यवस्था कर ली और मुझे अपनी क्लास से जुड़ने के लिए ऑनलाइन निमंत्रण भेजा। यह मेरे लिए एक अविस्मरणीय और भावुक क्षण था। खरोरा संकुल के शिक्षक तकनीक का उपयोग करना सीखें इसके लिए मैं कई सालों से प्रयासरत था। मुझे खुशी है कि मेरे प्रयासों को उनका साथ मिला। इस काम के लिए हमे शिक्षा सचिव का सराहना का प्रमाणपत्र भी प्राप्त हुआ था।

मैंने वर्ष 2013 में संकुल समन्वयक का कार्यभार संभाला, जब किसी भी क्षेत्र में तकनीक को खास महत्व नहीं दिया जाता था, खासकर छत्तीसगढ़ जैसे प्रदेश में। शासन स्तर की जानकारियों का आदान-प्रदान कागज़ के माध्यम से ही होता था। अधिकांश शिक्षकों के पास तो स्मार्टफोन भी नहीं थे लेकिन मेरा अंदाजा था कि जल्द ही तकनीक की बड़ी सी लहर आनेवाली है। मेरे केंद्र के शिक्षक इसके लिए तैयार हों इसलिए मैंने शिक्षकों को स्मार्टफोन और तकनीक के इस्तेमाल का आग्रह करना शुरू किया। उस समय 95% शिक्षकों ने यह कहकर मना कर दिया कि "इसका खर्च कौन उठाएगा? मोबाइल में नेट पैक कौन डलवाएगा?"

इसके बावजूद मैंने शिक्षकों का विश्वास जीतने के प्रयास जारी रखे।

2015 में शासन से एक निर्देश आया कि जानकारियों को तेजी से पहुंचाने के लिए विकासखंड और संकुल स्तर पर व्हाट्सएप ग्रुप बनाए जाए। शासन निर्देश का फायदा उठाकर मैंने बैठकों में तकनीक के उपयोग से होनेवाले लाभों पर ज़ोर देना शुरू किया। शिक्षकों को धीरे धीरे स्मार्टफोन और कंप्यूटर पर फ़ोल्डर बनाना, फाइल सेव करना, गूगल फॉर्म बनाना और उसमें प्रश्न तैयार करना सिखाया। शिक्षक भी धीरे-धीरे सीखने में रुचि लेने लगे।

शासन स्तर की जानकारियों का आदान-प्रदान कागज़ के माध्यम से ही होता था। अधिकांश शिक्षकों के पास तो स्मार्टफोन भी नहीं थे लेकिन मेरा अंदाजा था कि जल्द ही तकनीक की बड़ी सी लहर आनेवाली है। मेरे केंद्र के शिक्षक इसके लिए तैयार हों इसलिए मैंने शिक्षकों को स्मार्टफोन और तकनीक के इस्तेमाल का आग्रह करना शुरू किया।

2020 में जब कोरोना काल आया और शासन ने "पढ़ाई तुहर दुआर" योजना के तहत ऑनलाइन कक्षाएं लेने का आदेश दिया, तब खरोरा केंद्र के शिक्षक पूरी तरह तैयार थे। पहले मैंने खुद प्रतिदिन शिक्षकों की आधे घंटे की ऑनलाइन क्लास लेकर उन्हें ऑनलाइन कक्षाएं चलाने का तरीका बताया और फिर उसी तरह ऑनलाइन कक्षाओं से छात्रों को जोड़ने के लिए उन्हें प्रेरित किया।

इस प्रकार लॉकडाउन के दौरान भी बच्चों का अध्ययन डिजिटल माध्यम से जारी रहा क्योंकि शिक्षक स्वेच्छा से, बिना किसी दबाव या निगरानी के, डिजिटल माध्यमों से पढ़ाना और बैठकें कर लेते थे। परिणामस्वरूप, पूरे जिले में खरोरा संकुल के छात्रों की ऑनलाइन कक्षाओं में उपस्थिति सबसे अधिक रही। इससे यह पूरा सफर सार्थक बन गया।

हम संकुल के शिक्षकों को सही समय पर "डिजिटली स्मार्ट" बना पाएं, जिससे आज इस संकुल का हर शिक्षक अलग अलग डिजिटल गतिविधियों के द्वारा अच्छी अधिगम उपलब्धियां (learning outcomes) पा रहा है। ■

सफलता के साथ सेल्फ़ी लेता सेन्दुर्वाफा-1 स्कूल

सेन्दुर्वाफा-1 (भंडारा): कक्षा की एक दीवार पर लिखा है: **'Selfie with Success'।** कोई बच्चा पहली बार कहानी पूरी पढ़ ले, कविता याद कर ले, कोई पहाड़ा पूरा सुना दे, या फिर कोई अच्छा काम ही कर ले - जैसे बिना बोले किसी की मदद कर दी - तो उसकी सेल्फ़ी पक्की!

बात हो रही है भंडारा के जिला परिषद उच्च प्राथमिक शाला, सेन्दुर्वाफा-1 की। स्कूल की सहायक शिक्षिका सविता ब्राह्मणकर टीम विनोबा से हो रही बातचीत में कहती हैं, "सफलता सिर्फ किताबी पढ़ाई की नहीं, व्यवहार की भी नापनी चाहिए, है न?"

जब सविता जी के मोबाइल पर 'Vinoba App' से नोटिफिकेशन आता है — "आपकी पोस्ट 'Selfie with Success' आज सबसे ज़्यादा देखी गई" – तब सविता जी और भी प्रेरित होती हैं।

इसी तरह, स्कूल में जब दूसरी कक्षा की कोई बच्ची नाटकीय अंदाज़ में कविता सुनाती है, तब उसकी आँखों में चमक, आवाज़ में जोश, और हर शब्द में अभिनय होता है।

"शिक्षा किताबों के परे एक मंच मांगती है, जहाँ छात्र अपने भीतर की प्रतिभा को पहचान सकें और शिक्षक अपनी रचनात्मकता को साझा कर सकें," सविता जी कहती हैं। वह मानती हैं कि 'विनोबा' ऐप जिला परिषद स्कूलों के लिए ऐसा ही एक मंच ले कर आया है।

वह बताती हैं कि उनके स्कूल के सभी शिक्षक मानते हैं – सरकारी स्कूलों में बच्चों को जोड़े रखने के लिए पढ़ाई को खेल जैसा रोचक बनाना जरूरी है।

पूरी कहानी पढ़िये विनोबा ऐप पर

हिरोशिमा से हमारे स्कूल तक...

सुबह रामपुर गाँव के प्राथमिक विद्यालय में प्रार्थना हुई। बच्चे लाइन में खड़े थे। प्रार्थना के बाद तेजपाल यादव सर ने अचानक बच्चों से पूछा, "क्या तुम जानते हो, दुनिया का पहला परमाणु बम कहाँ और क्यों गिराया गया था?"

कुछ फुसफुसाहटें हुईं — "जापान..."

"सही," गुरूजी बोले, "पर क्यों?"

सन्नाटा छा गया।

फिर उन्होंने बताया, "दूसरे विश्व युद्ध में जापान ने कई देशों पर हमला किया था। उसे रोकने के लिए अमेरिका ने हिरोशिमा और नागासाकी पर बम गिराए। लाखों लोग मारे गए। शहर तबाह हो गए। लेकिन उसके बाद जापान ने बदले की जगह बदलाव को चुना।"

बच्चे ध्यान से सुन रहे थे। गुरूजी मुस्कुराए, "सुना है, वहाँ बच्चे हफ्ते में एक दिन खुद स्कूल और टॉयलेट साफ करते हैं।"

"लेकिन क्यों?" एक बच्चे ने पूछा।

गुरूजी ने कंधे उचकाते हुए कहा, "ये तो शायद करके ही समझ आए|" कक्षा में हलचल हुई।

"तो सोच रहा हूँ," गुरूजी बोले, "रमेश काका आज नहीं आए हैं — उनके बच्चे की तबीयत ठीक नहीं है। क्या आज हम उनकी जगह सफाई कर सकते हैं? शायद तभी हमें भी समझ आए कि जापानी बच्चे ऐसा क्यों करते हैं।"

कक्षा में अब तेज हलचल थी। कृष बोला, "मतलब पहली दो क्लासें कैंसिल?" सब हँस पड़े।

"बिलकुल!" शिक्षक ने मुस्कराकर कहा। "एक घंटे तक पढ़ाई नहीं, बस सफ़ाई! रामु काका एक हैं और आप अनेक - तो सफाई कैसे होनी चाहिए?

"शानदार।" - कुछ बच्चे जोश में बोले।

शिक्षा संदेश

"अगर सफाई अच्छी हुई तो शनिवार को हम जंगल के सैर पर जायेंगे।" गुरूजी ने गंभीर हो कर कहा।

अब तो जैसे बच्चों को पंख लग गए। झाड़ू, पोछा, कपड़ा, बाल्टी....जो हाथ लगा, पकड़ लिया। कोई कुर्सियाँ उठाकर जमाने लगा, कोई खिड़की के शीशे चमकाने में लग गया। एक ग्रुप ने टॉयलेट्स की सफाई का बीड़ा उठाया और पहली बार वहाँ हँसी सुनाई दी।

"गुरुजी, इस टॉयलेट में तो भूत भी न घुसे! कौन ऐसे गंदे करता है?" एक बच्चा बोला, नाक पर रुमाल बाँधते हुए।

एक और ने कहा, "अब समझ आया रमेश काका हमेशा क्यों कहते थे, बेटा, सीट पर ठीक से बैठा करो!"

धीरे-धीरे, एक घंटा बीत गया। अब सबके माथे पर पसीना था, बाल बिखरे हुए थे, और चेहरे थके हुए लेकिन मुस्कराते थे। एक नयी चमक थी - स्कूल परिसर में और बच्चों के चेहरे पर। गुरूजी ने सबको पानी दिया, बैठने को कहा।

बच्चे थोड़ी देर चुप रहे। फिर आर्यन ने धीरे से कहा, "आज समझ में आया कि रमेश काका का काम कितना बड़ा है... और हम हर दिन उसे कितना हल्के में ले लेते थे।"

वृशाली बोली, "और शायद जापान इसलिए बच्चों से सफाई करवाता है... ताकि हम जिम्मेदारी समझें — अपनी जगह साफ रखें... दूसरों का काम न बढ़ाएँ।"

कोई किताब नहीं खुली उस दिन। लेकिन हर बच्चे के भीतर एक नया पाठ लिखा गया — इंसानियत का, सम्मान का, और जिम्मेदारी का।

"गुरूजी," किसी ने धीरे से कहा, "आज जो सीखा... वो पढ़ा नहीं, महसूस किया।" ■

- संदेश संजय थोरवे

'व्यापक स्तर पर बदलाव शिक्षा से ही संभव है'

पुणे: 'दर्पण 2025', ओपन लिंक्स फाउंडेशन (OLF) का वार्षिक सम्मेलन, भारत में स्कूली शिक्षा को बदलने के लिए प्रतिबद्ध दूरदर्शी नेताओं, प्रशासकों, शिक्षाविदों और विकास भागीदारों को एक साथ लाया। पुणे के यशदा (YASHADA) में आयोजित इन सत्रों में रणनीतिक साझेदारियों, जिला-स्तरीय नवाचारों और सार्वजनिक शिक्षा में गुणवत्ता व समानता की दिशा में बढ़ते आंदोलन पर प्रकाश डाला गया। फाउंडेशन के संस्थापक और CEO संजय डालमिया ने "OLF 2024-25 Journey of Impact and Possibility" प्रस्तुत किया। अपनी इस प्रस्तुति में उन्होंने अपने शक्तिशाली विज़न को एक पंक्ति में व्यक्त किया: "हम चाहते हैं कि लोग सरकारी स्कूल के शिक्षकों पर विश्वास करना शुरू करें।"

इस विशेष अवसर पर, प्रख्यात शिक्षाविद् शरद चंद्र बेहर (IAS 1961 बैच) ने 'डिजिटल गवर्नेंस इन एजुकेशन' नामक पुस्तक का विमोचन किया। उन्होंने अपने परिचित अंदाज़ में सभी को मंत्रमुग्ध करते हुए कुछ अनमोल मोती हमें दिए। उन्होंने कहा, "व्यापक स्तर पर बदलाव शिक्षा से ही संभव है। इसलिए शिक्षा में जो अभी हो रहा है उसको और अच्छा कर दो, इतना कि जो जो बच्चे स्कूल नहीं आ सके, उनको भी शिक्षा मिलनी चाहिए।"

इसी अवसर पर YASHADA की उप महानिदेशक सुश्री पवनीत कौर (IAS) ने '41 टीचर स्टोरीज' पुस्तक का अनावरण किया। यह पुस्तक सरकारी स्कूलों में शिक्षकों के साहस, रचनात्मकता और प्रतिबद्धता का सम्मान करती है। इस अवसर पर, अभिनेत्री और लेखिका सोनाली कुलकर्णी ने बच्चों की नई पत्रिका 'चकमक' का विमोचन कर कार्यक्रम में चार चांद लगा दिए।

प्रशासकों, शिक्षकों और OLF के समर्थकों ने पैनल चर्चाओं में विस्तार से बताया कि कैसे विनोबा ऐप ने विभिन्न जिलों में शिक्षादान के कार्य में क्रांतिकारी परिवर्तन लाए हैं। उन्होंने बताया कि यह ऐप अकादमिक प्रदर्शन में सुधार लाने, मूल्यांकन प्रक्रियाओं को सुगम बनाने, जीवन कौशल कार्यक्रमों को अधिक रुचिकर बनाने के साथ-साथ समुदाय में विश्वास स्थापित करने में एक निर्णायक उपकरण (गेम-चेंजर) बनकर उभरा है।

विनोबा ऐप की व्यापक स्वीकार्यता अद्भुत है। हम इस ऐप को ज्यादा से ज्यादा जिला परिषदों में लागू करेंगे।
डॉ. मल्लिनाथ कलशेट्टी (IAS), निदेशक, YASHADA

विनोबा ऐप ने प्रशासकों, शिक्षकों और सहकर्मियों के बीच त्रि-आयामी संचार को संभव बनाया है। इस ऐप ने पुरानी चुनौतियों का समाधान कर के नवाचार के लिए एक नई जगह बनाई है।
- श्री आयुष प्रसाद (IAS), जलगाँव कलेक्टर

विनोबा का मानव-केंद्रित दृष्टिकोण, इसकी पारदर्शी पुरस्कार प्रणाली और बड़े पैमाने पर सहकर्मी-शिक्षण (peer learning) अद्वितीय है। यह शिक्षा क्षेत्र में बड़ा बदलाव लाएगी।
- आकाश छिकारा (IAS), पूर्व कलेक्टर, जांजगीर-चांपा

विनोबा शिक्षा क्षेत्र में ताज़ी हवा का झोंका बनकर आया है। इस ऐप का डेटा-संचालित कार्य और इससे शिक्षकों को मिलने वाली पहचान सराहनीय है। **- नम्रता गांधी** (IAS), पूर्व कलेक्टर, धमतरी

एक पैनल चर्चा में, OLF के ट्रस्टी राजीव कुमार और फाउंडेशन के मार्गदर्शकों—शैलेंद्र झा, शंकर कृष्णन, दिव्या कृष्णन, संबासिवन गणेशन, संतोष सेनापति, राजिंदर रैना, और कैप्टन अनिल धनखर—ने फाउंडेशन की अब तक की यात्रा और उसके बढ़ते प्रभाव पर अपने विचार साझा किए। सभी ने ओएलएफ के स्पष्ट विज़न, उसकी दृढ़ प्रतिबद्धता और सरकारी स्कूलों में उसके कार्यों की परिवर्तनकारी क्षमता पर पूर्ण सहमति व्यक्त की। सबने माना कि: "OLF जो कार्य कर रहा है, वह असाधारण रूप से चुनौतीपूर्ण है; फिर भी टीम विनोबा बिना किसी अधिकार या तामझाम के, अपने जुनून, विनम्रता और निरंतरता के बल पर व्यवस्था में बड़ा परिवर्तन ला रही हैं।"

OLF का हाई-टेक विनोबा कार्यक्रम सरकारी स्कूलों में शिक्षा का स्तर बढ़ाने के लिए, जिला प्रशासन के साथ मिलकर शिक्षकों की सहायता करता है, उन्हें पुरस्कृत और प्रोत्साहित करता है। साथ ही अभिनव उपक्रमों को लागू करने की क्षमता बढ़ाने पर काम करता है।

ओपन लिंक्स फाउंडेशन
बंगलो नं. 3, तात्या टोपे सोसायटी, शिवरकर गार्डन के सामने, पुणे-411040
संस्थापक: **संजय डालमिया** ■ सह संस्थापक: **रीना डालमिया**
संपादक: **अमोल मावकर**